बपतिस्मा और "जीवन का नयापन"

"क्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, तो उस की मृत्यु का बपतिस्मा लिया? सो उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें" (रोमियों 6:3, 4)।

रोमियों 1:6-7 को समझने के लिए इन आयतों तक ले जाने वाले पौलुस के विचारों को समझना जरूरी है। 1-3 अध्यायों में, पौलुस मसीह के बिना अन्यजातियों और यहूदियों की स्थिति पर चर्चा कर रहा था।

अन्यजाति लोग हर प्रकार के पापमय जीवन में लिप्त थे, जो यहूदियों की दृष्टि से बहुत ही घृणाजनक था। वे मूर्तिपूजक, अनैतिक यौन-सम्बन्ध रखने वाले और अधर्मी लोग थे (1:24-32)।

यहूदियों की स्थिति भी इनसे ज्यादा अच्छी नहीं थी, क्योंकि उनका जीवन भी कुछ ऐसा ही था (2:1)। अपनी आत्मिक भलाई के लिए, वे इस तथ्य पर निर्भर थे कि उनके पास व्यवस्था थी और उनका खतना हुआ था (2:17, 25)। उनका जीवन व्यवस्था के मापदण्ड या खतने के अर्थ के अनुसार नहीं था। वे भी अन्यजातियों की तरह ही, पापी थे (3:9, 10, 23)।

उनके कामों के कारण उनका उद्धार होने के बजाय, उन पर दोष ही लगता था (2:5-13)। न तो अन्यजाति और न ही यहूदी अपने कर्मों से उद्धार पा सकते थे, क्योंकि वे सब पापी ही थे (3:9, 10, 23) और उनके कर्म उन्हें सिद्ध नहीं कर सकते थे। अपने कर्मों पर भरोसा रखने के बजाय (4:1-8), जिनमें बुरे कर्मों से बाधा पड़ती थी, उन्हें यीशु के काम में विश्वास रखना आवश्यक था, जिसने उनके उद्धार के लिए परमेश्वर के अनुग्रह को सम्भव बनाया था (5:1, 2)।

यह अनुग्रह व्यवस्था से नहीं मिलता था बल्कि इसके विपरीत यह इसे मानने वालों को उनके पाप में ही रहने देती थी (3:20; 5:20, 21)। अन्यजातियों की स्थिति कोई अच्छी नहीं थी, क्योंकि वे इस तथ्य के कारण पापी थे कि उन्होंने मानवीय मूल्यांकन और अनुभव से प्राप्त की गई परमेश्वर की इच्छा के ज्ञान का उल्लंघन किया था (1:21; 2:14, 15)। यहूदी और अन्यजाति दोनों ही अधर्मी थे, क्योंकि दोनों ने ही उस मापदण्ड को तोड़ा था

जिसमें वे रह रहे थे। क्षमा को सज़्भव बनाने के लिए परमेश्वर ने उनके पापों और अपराधों को ढांपने के लिए, धार्मिकता और क्षमा लाने के लिए यीशु द्वारा अनुग्रह उपलज़्ध कराया (5:20, 21)।

''ज़्या पाप करते रहें कि अनुग्रह बहुत हो?'' (6:1)

क्षमा पाए किसी व्यज़्ति के मन में यह प्रश्न उठा होगा: ''ज़्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो?'' (रोमियों 6:1ख)। इसकी तुलना एक जवान दुल्हन से की जा सकती है जिसके धनी चाचा ने उससे कहा कि यदि उसे और उसके पति को किसी प्रकार की कोई आर्थिक तंगी आती है तो वह उनका कर्ज उतार देगा। वह अपने पति से बात करती है और निष्कर्ष निकालती है कि वे पैसों की चिंता न करें, बल्कि ऐसी चीज़ें खरीद लें जो उनकी पहुंच से बाहर हों, जैसे एक महंगी कार, नया घर, महंगे कपड़े और जेवर आदि। तौभी वे बहुत सी चीज़ें उधार लेकर धनी चाचा द्वारा कर्ज की अदायगी किए जाने के कारण चाचा की मंशा और उदारता का अनुचित लाभ उठाते हैं।

इसी तरह, परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की है कि उसके अनुग्रह से हमारे पाप ढांप दिए जाएंगे, परन्तु इसमें उसका अभिप्राय हमें पापपूर्ण जीवन जीने के लिए उत्साहित करना नहीं है। अनुग्रह का यह उद्देश्य नहीं है। पौलुस ने सिखाया कि बपतिस्मे में एक उचित आत्मिक भागीदारी से एक नया स्वभाव बनना चाहिए। मसीही व्यज़्ति को यीशु में नया जीवन जीना आवश्यक है अर्थात अनुग्रह पर निर्भर होने के कारण वह पाप में लगा नहीं रहता।

''उसकी मृत्यु का [में] बपतिस्मा'' (6:3, 4)

बपतिस्मा और नया जीवन

कुछ लोगों को यह अजीब लग सकता है कि पौलुस ने अनुग्रह के अपमान के विरुद्ध अपनी बात करने के आधार के लिए बपतिस्मे को चुना (रोमियों 6:1-7)। यदि बपतिस्मा आत्मिक सज़्बन्धों के बिना केवल एक संस्कार ही होता, तो पापपूर्ण जीवन के समाप्त होने के लिए बपतिस्मे से कोई तर्क नहीं निकाला जा सकता था। परन्तु यदि बपतिस्मे से एक आत्मिक अर्थात जीवन बदलने वाला अनुभव मिलता है परमेश्वर की आज्ञाकारिता के शारीरिक कार्य से बढ़कर है, तो पौलुस का तर्क मानने योग्य है कि बपतिस्मे के बाद नया जन्म होता है।

यीशु की मृत्यु में बपतिस्मा लेकर हमारा सज़्बन्ध यीशु के साथ बन जाता है (रोमियों 6:3)। क्रूस पर अपनी मृत्यु के द्वारा, यीशु ने अपना शारीरिक प्राण दे दिया परन्तु वह तो केवल शारीरिक जीवन में नये सिरे से प्रवेश होने के लिए ही था। आत्मिक अर्थ में बपतिस्मा वह क्षण और कार्य होना चाहिए जिसमें हमारे पिछले पापपूर्ण जीवन का अंत और नए आत्मिक जीवन का आरज़्भ हो। पौलुस का अभिप्राय यह है कि एक पापी व्यज़्ति के रूप में पानी में शारीरिक रूप से प्रवेश करने और उसी पापपूर्ण स्थिति में बाहर आने के

बजाय, हमें पुराने पापपूर्ण जीवन को खत्म करके नये आत्मिक जीवन में प्रवेश करना चाहिए ज़्योंकि यीशु की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान से हमारे जीवन का सज़्बन्ध उससे जुड़ गया है।

पौलुस ने बपतिस्मे को एक सांकेतिक कार्य से अधिक के रूप में देखा है। डगलस मू ने लिखा है:

> ... रोमियों 6 में या [नये नियम में] कहीं भी कोई प्रमाण नहीं है कि वास्तविक शारीरिक क्रियाएं अर्थात बपतिस्मे में डुबकी और फिर से बाहर निकलना सांकेतिक महत्व से मेल खाते थे। निश्चय ही, रोमियों 6 में केन्द्र बिन्दु बपतिस्मा के संस्कार पर नहीं, बल्कि केवल बपतिस्मे की *घटना* है।[1]

ऐंडर्स नाइग्रेन इससे सहमत है:

> बपतिस्मा लेने वाला पानी में डूब जाता है, तो उसका यह कार्य ''मसीह के साथ'' गाड़े जाने का संकेत है; और जब वह पानी में से फिर बाहर आता है, तो वह ''मसीह के साथ'' जी उठने का संकेत है। परन्तु यदि उस कारण कोई बपतिस्मे के पौलुस के दृष्टिकोण को उस अर्थ में जिसमें इसका उपयोग सामान्यतया किया जाता है, ''सांकेतिक'' कहे तो वह पूरी तरह से उसकी गलत व्याज़्या होगी। ज़्योंकि, पौलुस के अनुसार, बपतिस्मे में हमारे सामने वास्तविकताएं होती हैं, न कि केवल सांकेतिक प्रतिनिधित्व। जिसका संकेत बपतिस्मे में मिलता है वह भी वास्तव में *होता* है, और संक्षेप में बपतिस्मे द्वारा।[2]

फिर तो बपतिस्मा हमें यीशु में उसकी मृत्यु से जोड़ता है।

नये जीवन के बारे में तीन प्रश्न

रोमियों 6:1-3 में पौलुस ने तीन प्रगतिशील प्रश्न पूछे। (1) ''ज़्या हम पाप करते रहें, कि अनुग्रह बहुत हो?'' (आयत 1ख); (2) ''हम जब पाप के लिए मर गए तो फिर आगे को उस में ज़्योंकर जीवन बिताएं?'' (आयत 2ख); और (3) ''ज़्या तुम नहीं जानते, कि हम जितनों ने मसीह यीशु का (अर्थात में) बपतिस्मा लिया, तो उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया?''

पौलुस ने पहले प्रश्न का उज़र दिया कि, ''कदापि नहीं!'' इस वाज़्यांश का इस्तेमाल यह अर्थ देता है कि मसीही लोग अपने पापों को ढांपने के लिए अनुग्रह पाने की उज़्मीद से पाप में लगे नहीं रह सकते। पौलुस का प्रश्न साहित्यिक था ज़्योंकि वह यह सुझाव नहीं दे रहा था कि उन्हें इसका उज़र मालूम नहीं था बल्कि इसलिए कि उन्हें समझाने की आवश्यकता होगी। वह यह ज़ोर दे रहा था कि बपतिस्मे में अपने अनुभव के कारण उन्हें पहले ही समझ होनी चाहिए कि वह ज़्या कह रहा था।

इसी प्रकार पौलुस का दूसरा प्रश्न इसके उज़र का सुझाव देता है। यदि हम पाप से मर गए हैं, तो हम इसमें जीवन न बिताएं।

तीसरे प्रश्न के उज़र में, पौलुस ने कहा कि पाप से हमारी मृत्यु यीशु में बपतिस्मा लेने के समय हुई थी जब हमने उसकी मृत्यु में प्रवेश किया था। ज़्योंकि हम उस मृत्यु से जी उठे हैं, इसलिए हमें पापपूर्ण जीवन से छूटने के कारण जीवन के नयेपन में चलना चाहिए।

''मर गए'' (आयतें 2, 7, 8), ''मरा'' (आयतें 11, 13), और ''मृत्यु'' (आयत 4) से पौलुस के कहने का भाव यह था कि इसका परिणाम हमारे पापपूर्ण अतीत को छोड़ना होना चाहिए। ''के लिए मरे हुए,'' ''के लिए मर गया,'' और ''की ओर से मर गए'' से वह इस धारणा को व्यज़्त कर रहा था कि पाप की वह सामर्थ जो पहले हम पर नियन्त्रण करती थी (रोमियों 7:4; गलतियों 2:19; कुलुस्सियों 2:20; 3:3-5; 1 पतरस 2:24) खत्म हो जानी चाहिए। पौलुस ने आयत 2 में लिखा कि हम ''पाप के लिए मर गए।'' ''यह कब और कैसे हुआ? प्रेरित के अनुसार यह बपतिस्मे में और बपतिस्मे के द्वारा हुआ।''[3]

पाप से मृत्यु का हमारा उद्देश्य पाप भरे जीवन का अन्त और *एक नया जीवन* अर्थात धार्मिकता का जीवन आरज़्भ करना है (रोमियों 6:4)। बपतिस्मा लेने पर हम आत्मिक अर्थ में यीशु की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान की समानता में आते हैं। बपतिस्मे के द्वारा हमें आत्मिक नयेपन में प्रवेश करना चाहिए, जैसे यीशु ने भी अपने जी उठने के द्वारा एक शारीरिक नयेपन में प्रवेश किया था (रोमियों 6:5)।

यह परिवर्तन इसलिए आता है ज़्योंकि बपतिस्मे में ''हमारा पुराना मनुष्यत्व उसके साथ क्रूस पर चढ़ाया गया, ताकि पाप का शरीर व्यर्थ हो जाए, ताकि हम आगे को पाप के दासत्व में न रहें'' (रोमियों 6:6)। पौलुस यह सुझाव नहीं दे रहा था कि पुराने स्वभाव का केवल एक ही भाग समाप्त हो, बल्कि वह कह रहा था कि पुराने मनुष्य को यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ा देना चाहिए। उसका परिणाम यह होना चाहिए कि हम ''पाप से छूट गए'' हैं (रोमियों 6:7)। पाप से मरकर, हम पाप की दासता, पाप के अधिकार, और पाप करने से छूट जाते हैं। यह सब यीशु के साथ बपतिस्मे में गाड़े जाने और जी उठने में उसकी आत्मिक भागीदारी के कारण होना चाहिए।

पाप के लिए मरने और धार्मिकता के लिए जी उठने के लिए केवल बपतिस्मे का कार्य ही काफी नहीं है, बल्कि इसके साथ मन की प्रतिक्रिया का कार्य भी जुड़ा है। ''परन्तु परमेश्वर का धन्यवाद हो, कि तुम जो पाप के दास थे तौभी मन से उस उपदेश के माननेवाले हो गए, जिस के सांचे में ढाले गए थे। और पाप से छुड़ाए जाकर धर्म के दास हो गए'' (रोमियों 6:17, 18)।

''आगे को पाप के दासत्व में न रहें'' (6:6, 7)

पौलुस क्षमा होने के अर्थ में पाप से छूटने की बात नहीं कर रहा था, जबकि यह बपतिस्मे से जुड़ी आशिषों में से एक है (प्रेरितों 2:38; 22:16)। रोमियों 6:1-4 में उसका उद्देश्य यह दिखाना था कि हम पाप के बंधन और दासता से छूट गए हैं, इसलिए हमें क्षमा

के लिए परमेश्वर के अनुग्रह पर निर्भर रहकर पाप में नहीं लगे रहना चाहिए। उसने यह नहीं कहा कि मसीही लोगों के लिए पाप में जीवन बिताना सम्भव नहीं है बल्कि उसने यह कहा कि पाप करना हमारे नये जीवन और पाप से हमारी नई स्वतन्त्रता के विपरीत है। हमें नया जीवन इसलिए बिताना चाहिए क्योंकि हम पाप के लिए यीशु की मृत्यु में प्रवेश करके बपतिस्मे के द्वारा नये जीवन में प्रवेश कर गए हैं। पुराने चाल चलन को क्रूस पर चढ़ा देना चाहिए; पाप के शरीर को मिटाकर हमें पाप की सेवा में नहीं लगे रहना चाहिए (रोमियों 6:7)।

इस कारण अपने आपको "पाप के लिए तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिए यीशु में जीवित" (रोमियों 6:11) समझना चाहिए। हमें पाप को अपने शरीर पर हावी नहीं होने देना चाहिए जिससे हम पाप की मानकर उसके दास बन जाएं (रोमियों 6:12)।

यदि हम पाप में जीवन बिताते हैं, तो पाप के दास बन जाते हैं (रोमियों 6:16)। हमें धार्मिकता के दास बनना चाहिए, क्योंकि हमें पाप से और पाप के दासत्व से छुड़ाया गया है (रोमियों 6:13, 16, 19, 22)। यह तथ्य कि हम अनुग्रह के क्षमा करने वाले लाभों के अधीन हैं, व्यवस्था के नहीं (रोमियों 6:15) हमें पाप *से* स्वतन्त्र करता है, पाप करने *के लिए* नहीं। पाप दास बनाता है; स्वतन्त्रता नहीं देता (यूहन्ना 8:34)। इस लिए हमें आगे से पाप नहीं करना चाहिए बल्कि पाप के लिए मरे रहकर धार्मिकता के लिए जीवित होना चाहिए। हम पाप से स्वतन्त्र हैं क्योंकि हमने बपतिस्मे के समय मन से आज्ञा मानी थी (रोमियों 6:4-6, 17, 18)।

सारांश

इन आयतों में पौलुस ने बपतिस्मे को केन्द्र बिन्दु बना दिया जिसमें हमारा पुराना जीवन समाप्त और नया जीवन आरम्भ होता है। यह यीशु के साथ मन से गाड़े जाने और जी उठने की संगति के कारण होता है। बपतिस्मे का कार्य अपने आप से या अपने आप में ज़रूरी नहीं कि ऐसा बदलाव लाता है। परन्तु जब यह समझते हुए कि यह परिवर्तन होना हम आत्मिक रूप से बपतिस्मे के कार्य से यीशु के गाड़े जाने और जी उठने में भाग लेते हैं, तो पुराना जीवन खत्म होकर एक नया जीवन आरम्भ हो जाएगा।

पाद टिप्पणियां

[1]डगलस जे. मू, *द एपिस्टल टू द रोमन्स,* द न्यू इंटरनेशनल कमैन्ट्री ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट, सामा. संस्क. नेड बी. स्टोनहाउस, एफ़ एफ़ ब्रूस, एण्ड गोरडन डी. फी (ग्रैंड रैपिड्स मिशि.: Wm.B. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं. 1996), 362. [2]ऐंडर्स नाइग्रैन, *कमैन्ट्री ऑन रोमन्स,* अनु. कार्ल सी. रसमुसेन (फिलाडेल्फिया: मुहलेनबर्ग प्रैस, 1949), 233. [3]वहीं, 234.

गाड़े गए और जी उठे (रोमियों 6:4)

बपतिस्मे में यीशु के साथ गाड़े जाने और जी उठने के ज़्या अर्थ हैं ? बपतिस्मे का कार्य तब पूरा होता है जब हम पानी के अंदर गाड़े जाकर पानी से बाहर निकलते हैं। अधिकतर लेखक एवरेट एफ़. हैरिसन की इस व्याज़्या से सहमत हैं: ''स्पष्टतया, [रोमियों 6 में पौलुस] बपतिस्मे के पानी के अन्दर देह के डुबोए जाने में, चाहे क्षणिक ही है, मसीह के साथ गाड़े जाने की तस्वीर बनाता है।''[1]

पाद टिप्पणी

[1]ऐवरट एफ़. हैरिसन, *द एज़्सपोज़िटर'स बाइबल कमैन्ट्री,* अंक 10, *रोमन्स-गलेशियन्स,* सामा. संस्क. फ्रैंक ई. गेबलेन (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: ज़ौंडर्वन, 1976), 69.